International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 781-782

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(4): 781-782
www.allresearchjournal.com
Received: 08-02-2016
Accepted: 15-03-2016

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

राजस्थानी चित्रकला के उदभव और विकास में मेवाड का प्रमुख योगदान

डॉ. सुशील निम्बार्क

प्रस्तावना

राजस्थानी चित्रकला अपनी नैसर्गिक भोगोलिक एवं ऐतिहासिक विशेशताओं के कारण विभिन्न शैलियों–उपशैलियों में विकसित और समृद्ध हुई है, उनके प्रमुख केन्द्र पारम्परिक रियासतें तो हैं ही, उनके अधीन क्षेत्रों की संस्कृति की भी उनके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अतः यहाँ प्रस्तुत की जा रही उनके प्रमुख केन्द्रों की चर्चा में उनके भूगोल और इतिहास के परिचय को भी आनुशंगिक समझा गया है।

राजस्थानी चित्रशैली का पहला और सबसे प्राचीन केन्द्र मेवाड़ माना जाता है। यह प्रदेश राजस्थान प्रान्त का दक्षिणी अंचल है। सन् 1947 में देश को मिली आजादी से पूर्व यह एक स्वशासी स्वतन्त्र राज्य था, कहा जाता है कि जिसकी स्थापना सातवीं–आठवीं शताब्दी में गुहिलवंशींय बापारावल ने, श्री एकलिंगजी के उपासक हारीतराशि के आशीर्वाद से, की थी।

राजस्थानी चित्रकला के उद्भव के इतिहास में मेवाड़ का पहला स्थान है। प्राक्–ऐतिहासिक काल के चित्रावशेष, जो यहाँ के आहड़, गिलूँड, बालाथल, वल्लभनगर आदि उत्खनन क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं, इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि इस प्रदेश की चित्रकला–परम्परा बहुत प्राचीन है और उसका शुभारम्भ यहाँ ईसा से दो हजार वर्श से भी पूर्व हो चुका था। मध्ययुगीन चित्रशैली का पहला नमूना यहाँ 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी' नामक पुस्तक के रूप में प्राप्त होता है। इसकी चित्रित प्रति सन् 1260 की है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका अपना महत्त्व है। दूसरी पुस्तक है – कल्पसूत्र। इसका चित्रांकन सन् 1418 में मोहवाड़ नामक गाँव में हुआ था। इसी तरह तीसरी चित्रित प्रति 'सुपार्श्वनाथ चरितम्' की प्राप्त हुई है, जिसका चित्रण अपभ्रंश शैली में सन् 1423 में हुआ था। इसी क्रम में मेवाड़ के आरम्भिक चित्रित ग्रन्थों में 'गीत गोविन्द आरण्यायिका' ग्रन्थ है। यह पुस्तक सन् 1455 में गोगूँदा नामक गाँव में चित्रित हुई थी। इसके बाद मेवाड़ शैली का उज्ज्वल रूप सन् 1540 में बिल्हण प्रणीत चौर पंचाशिका ग्रन्थ के चित्रों में मिलता है। 'चम्पावती बिल्हण' नामक चित्र इस दृष्टि से उदाहरणीय है। यह ग्रन्थ प्रतापगढ़ में चित्रित हुआ है तथा इसे चौर पंचाशिका शैली मानते हुए इसका उद्गम मेवाड़ में ही माना गया है।

मेवाड़ शैली की विकास–यात्रा में महाराणा कुम्भा (1433–1468 ई.) का शासन–काल भी महत्त्वपूर्ण रहा। सूत्रधार मंडन प्रणीत मूर्तिकला विशयक ग्रन्थ 'राजवल्लभ मंडन' में जहाँ चित्रकला विशयक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, वहाँ स्वरचित 'संगीतराज' में भी नाट्यशालाओं के चित्रों का सुन्दर विवरण मिलता है। कुम्भा के अनन्तर प्रमुखतः महाराणा उदयसिंह के समय (1535–1572 ई.) में मेवाड़ के चित्रकार नानाराम की चित्र–रचना भागवत पुराण का 'पारिजात अवतरण' उल्लेखनीय है। यह रचना अमेरिका के नस्लीहारामानिक संग्रह में सुरक्षित है। इसी क्रम में महाराणा प्रताप (1572–1596 ई) का शासन–समय संघर्शपूर्ण रहते हुए भी चित्रकला की दृष्टि से शून्य नहीं रहा।

इनके समय में मुगलशैली से प्रभावित सचित्र कृतियों में प्राचीनतम रचना 'ढोलामारू' है, जो नई दिल्ली के राश्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित है। यह रचना 1592 ई. की है। महाराणा प्रताप का यह समय चावण्ड की राजधानी में गुजर रहा था। अतः ये चित्र मेवाड़ शैली में चावण्ड षैली के नाम से जाने जाते हैं।

महाराणा प्रताप के बाद मेवाड़ की राजनीति में बदलाव आने के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। अमरसिंह यद्यपि अपने पिता की तरह दृढ़ प्रतिज्ञ था, फिर भी मुगलों की आंषिक अधीनता से बच नहीं सका। इस काल में चित्रकला पर मुगलिया प्रभाव छन–छन कर आता दिखाई देता है। इस समय का चित्रकार निसारदीन प्रसिद्ध था, जिसने चावण्ड में रागमाला के चित्र बनाये। महाराणा अमरसिंह के बाद मेवाड़ की चित्रकला पर मुगलकालीन प्रभाव गहरा होता चला गया।

मेवाड़ में चित्रांकन–परम्परा का समय खासकर मेवाड़ के षासक तेजसिंह, राणा लाखा, मोकल और कुम्भा का रहा। इन उपर्युक्त दुर्लभ चित्रों के बाद की परम्परा तो यहाँ उत्तरोत्तर समृद्ध रूप में विकसित होती चली गई। ज्यों–ज्यों राजनीतिक परिवेष बदला, कुम्भलगढ़, चित्तौड़गढ़, चावंड और उदयपुर अपने–अपने समय में मेवाड़ शैली की चित्रांकन परम्परा के केन्द्र के रूप में विकसित हो गये।

संदर्भ

1. डॉ. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास
2. कुमार स्वामी आनन्द की राजपूत पेन्टींग, बी.आर. पब्लिशिंग कारपोरेशन दिल्ली
3. राजस्थान का इतिहास, शिव पब्लिशर, के.एस. गुप्ता